04/07/2020

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

प्राथमिक समूह एवं द्वितीयक समूह में अंतर स्पष्ट करें।

Differentiate Between Primary and Secondary Groups

Primary Group	Secondary Group
1. प्राथमिक समूह का आकार छोटा होता है। इसका कारण यह है कि इनमें सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक 40-50 तक होती है।	1. द्वितीयक समूह का आकार बड़ा होता है क्यूंकि इसमें सदस्यों की संख्या असीमित होती है।
2. प्राथमिक समूह में सदस्यों के बीच face-to-face का सम्बन्ध होता है, अर्थार्थ इसमें शारीरिक समीपता अधिक होती है।	2. द्वितीयक समूह के सदस्यों के बीच face-to-face का सम्बन्ध नहीं होता है तथा इसके सदस्यों में शारीरिक समीपता नहीं पाई जाती है बल्कि दूरी पाई जाती है।
3. प्राथमिक समूह के सदस्य काफी लम्बे समय तक एक दूसरे के साथ अन्तः क्रिया (interaction) करते हैं।	3. द्वितीयक समूह के सदस्य थोड़ी देर के लिए एक दूसरे के साथ अन्तः क्रिया करते हैं।
4. प्राथमिक समूह में एक सामान्य उद्देश्य (common purpose) होता है जिसकी प्राप्ति के लिए सभी सदस्य एक साथ मिल कर कार्य करते हैं।	4. द्वितीयक समूह में सामान्य उद्देश्य न हो कर विशेष उद्देश्य होता है जिसकी प्राप्ति के लिए सदस्यों में मेल नहीं बल्कि competition होती है।
5. ऐसे समूह के सदस्यों के बीच घनिष्ट सम्बन्ध आसानी से बन जाता है क्यूंकि समूह का आकार छोटा होता है।	5. समूह में सदस्यों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध उसके बड़े आकार होने के कारण नहीं हो पता है।
6. समूह में सदस्यों के बीच व्यक्तिक सम्बन्ध होता है।	6. समूह में सदस्यों के बीच अव्यक्तिक सम्बन्ध होता है।
7. ऐसा समूह स्वतः निर्मित होता है। यह व्यक्ति की इच्छा से नहीं बनता है।	7. द्वितीयक समूह स्वतः निर्मित नहीं होता है। इसका निर्माण व्यक्ति की इच्छाओं द्वारा होता है।
8. ऐसे समूहों में सदस्यों के बीच सहयोग, अनुराग तथा प्रेम अधिक होता है। फलस्वरूप, इनके सदस्यों में अह्म-संहिता (ego-involvement) भी अधिक होती है।	8. ऐसे समूहों में सदस्यों के बीच सहयोग, अनुराग तथा प्रेम का सर्वथा अभाव रहता है। फलस्वरूप इनके सदस्यों में अह्म-संहिता (ego-involvement) बहुत ही कम होती है।
9. ऐसे समूहों में सदस्यों का उत्तरदायित्व	9. द्वितीयक समूह में सदस्यों का उत्तर्दयित्व

असीमित तथा अपरिभाषित होता है।	सीमित तथा उनकी भूमिकाएं परिभाषित होती है।
10. प्राथमिक समूह, जैसे- परिवार, पड़ोस तथा खेल समूह का महत्व व्यक्ति के समाजीकरण में अधिक होता है।	10. द्वितीयक समूह का महत्व व्यक्ति के समाजीकरण में अवश्य होता है परन्तु उतना नहीं जितना की प्राथमिक समूह का होता हैः।
11. प्राथमिक समूह स्वयं साध्य होता है अर्थार्थ वह अपने आप में एक लक्ष्य (goal) होता है।	11. ऐसा समूह स्वयं नहीं होता है क्यूंकि वह अपने आप में एक लक्ष्य नहीं होता है, बल्कि किसी लक्ष्य पर पहुँचने का एक माध्यम होता हैः।
12. प्राथमिक समूह एक छोटे क्षेत्र में फैला होता है। जैसे किसी व्यक्ति का परिवार एक ही मोहल्ले के दस अलग-अलग घरों में फैला हो सकता है।	12. द्वितीयक समूह बड़े क्षेत्र में फैला होता है। जैसे- किसी राजनैतिक पार्टी के सदस्यों की संख्या एक मोहल्ला या शहर तक सीमित न हो कर पुरे देश में फैली होती है।
13. ऐसे समूह में एक ही तरह की संस्कृति (culture) पाई जाती है। इसके सभी सदस्य एक ही संस्कृति में पाले-पोसे गए होते हैं।	13. ऐसे समूह के सदस्यों की संस्कृति में भिन्नता पाई जाती है। बड़े क्षेत्र में फैले होने के कारण इनके सदस्य भिन्न-भिन्न संस्कृति में पाले-पोसे जाते हैँ। अतः इसके सदस्यों के बीच सांस्कृतिक भिन्नता पाई जाती है।
14. प्राथमिक समूह सार्वभौमिक (universal) होता है अर्थार्थ वह सभी जगहों में पाया जाता है।	14. ऐसा समूह सार्वभौमिक नहीं होता है। कहीं पर तो यह होता है और कहीं पर नहीं।
15. प्राथमिक समूह अपने सदस्यों पर प्राथमिक साधनों द्वारा नियंत्रण करता है।	15. ऐसे समूह अपने सदस्यों पर गौण साधनों द्वारा नियंत्रण करता है।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है की प्राथमिक समूह और द्वितीयक में काफी अंतर हैः। व्यक्ति के प्रारंभिक समाजीकरण (early socialisation) प्राथमिक समूह का महत्त्व द्वितीयक समूह की अपक्षा काफी अधिक आता है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com